आतम बंधी आस पिया, मन तन लगे वचन।
कहे महामती कौन आवहीं, इत हुकम खसमके बिन।। १८ ।।

अब तन, मन और वचन से आपसे मिलने की मेरी आत्मा को आशा लगी है। महामतिजी कहते हैं कि इसको आपके बिना और कौन आकर पूरा कर सकता है?

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ ११८ ॥

विरह के प्रकरण-राग देसांकी

तलफे तारूनी रे, दुलही को दिल दे।
सनमंध मूल जानके रे, सेज सुरंगी पर ले।। १ ।।

मैं आपकी युवा अंगना हूं और आपके वियोग में तड़प रही हूं। कृपा करके मुझ दुलहिन को अपना दिल देकर परमधाम का मूल सम्बन्ध जानकर अपने इश्क और प्यार की शैय्या पर स्वीकार करें।

सब तन विरहे खाइया, गल गया लोहू मांस।
न आवे अंदर बाहेर, या विध सूकत स्वांस।। २ ।।

आपके वियोग ने मेरा शरीर जर्जर कर दिया है। इसमें खून सूख गया है और मांस भी गल गया है। अब सांस लेना भी भारी हो गया है।

हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन।
मांस मीज लोहू रगां, या विध होत हवन।। ३ ।।

मेरे तन की सब हड्डियां लकड़ी बन गयी हैं और सिर आपके विरह में नारियल बन चुका है। अब शरीर के मांस, मज्जा, खून और नसों को विरह की अग्नि में हवन कर देती हूं।

रोम रोम सूली सुगम, खंड खंड खांडा धार।
पूछ पिया दुख तिनको, जो तेरी विरहिन नार।। ४ ।।

मेरे रोएं-रोएं में आपके विरह के सूए चुभ रहे हैं और तलवार की धार (आप का विरह) से अंग टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं। हे धनी! मैं आपकी अंगना आपके विरह में दुःखी हूं। आप कृपा करके मेरा हाल तो पूछ लो।

ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाव।
ना दारू इन दरद का, फेर फेर करे फैलाव।। ५ ।।

आपके विरह के दर्द को वही जानता है जिसके कलेजे में विरह के घाव लगे होते हैं। इस कठोर दर्द की कोई दवा नहीं है। यह तो लगातार फैलता ही जाता है।

ए दरद तेरा कठिन, भूखन लगे ज्यों दाग।
हेम हीरा सेज पसमी, अंग लगावे आग।। ६ ।।

हे मेरे धनी! आपके विरह का दर्द बड़ा कठिन है। इसमें आभूषण, जला देने वाली अग्नि के समान लगते हैं। हीरे और सोने के पलंग जिस पर कोमल गद्दा बिछा होता है, वह सुख की बजाय विरह का दुःख बढ़ाते हैं।

Nijanand App

विरहिन होवे पिउ की, वाको कोई ना उपाए।
अंग अपने वैरी हुए, सब तन लियो है खाए।।७ ।।

हे धनीजी! आपकी जो ऐसी विरहिणी हो उसका और कोई उपाय नहीं है। उसके अपने ही अंग उसको दुश्मन के समान लगते हैं। उसे विरह के दुःख ने पूर्ण रूप से खा लिया है।

ए लछन तेरे दरद के, ताए गृह आंगन न सुहाए।
रतन जड़ित जो मंदिर, सो उठ उठ खाने धाए।।८ ।।

आपके विरह के दर्द की हकीकत का बयान किया है। आपकी विरहिणी को घर और आंगन अच्छा नहीं लगता और रत्नों से जड़े हुए, सब सुख से भरे साधन खाने को आ रहे हैं।

ना बैठ सके विरहनी, सोए सके ना रोए।
राजप्रथी पांउ दाब के, निकसी या विध होए।।९ ।।

आपकी विरहिणी को बैठने में, सोने में किसी तरह से चैन नहीं है। पूरी घर-गृहस्थी की सुख सामग्री का त्याग कर आपके विरह में भटकती है।

विरहा ना देवे बैठने, उठने भी ना दे।
लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक स्वांस ले।।१० ।।

आपका विरह उठने-बैठने नहीं देता है और लेटने भी नहीं देता है। केवल हाय धनी, हाय धनी की सांस चल रही है।

आठों जाम विरहनी, स्वांस लिए हूक हूक।
पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक।।११ ।।

इस तरह से हाय धनी, हाय धनी की रट दिन-रात लगने पर कठोर दिल वाले सुन्दरसाथ भी नर्म हो गए और साथ निभाने को तैयार हो गए।

एह विध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान।
परदा बीच टालने, ताथें विरहा परवान।।१२।।

हे मेरे धनी! आपने अपनी अंगना जानकर मेरे दिल में आकर साहस दिया तथा मैंने यह जो ऊपर तक वचनों में विरह किया वह केवल आपके और मेरे बीच में तामस का परदा हो गया था, सो हट गया।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ १३० ॥

राग धना मेवाड़

विरहा गत रे जाने सोई, जो मिल के बिछुरी होए, मेरे दुलहा।
ज्यों मीन बिछुरी जलथें, या गत जाने सोए, मेरे दुलहा।
विरहनी विलखे तलफे तारुनी, तारुनी तलफे कलपे कामनी।। १ ।।

हे मेरे धनी! विरह की हकीकत वही जानता है जो मिलने के बाद अलग होता है। जैसे मछली जल से अलग होती है तो विरह का अनुभव उसे होता है, इसलिए हे मेरे धनी! मैं आपकी युवा अंगना बिलख-बिलख कर विरह में तड़प रही हूं तथा मैं कामिनी आपके वियोग में कलप रही हूं।

Nijanand App